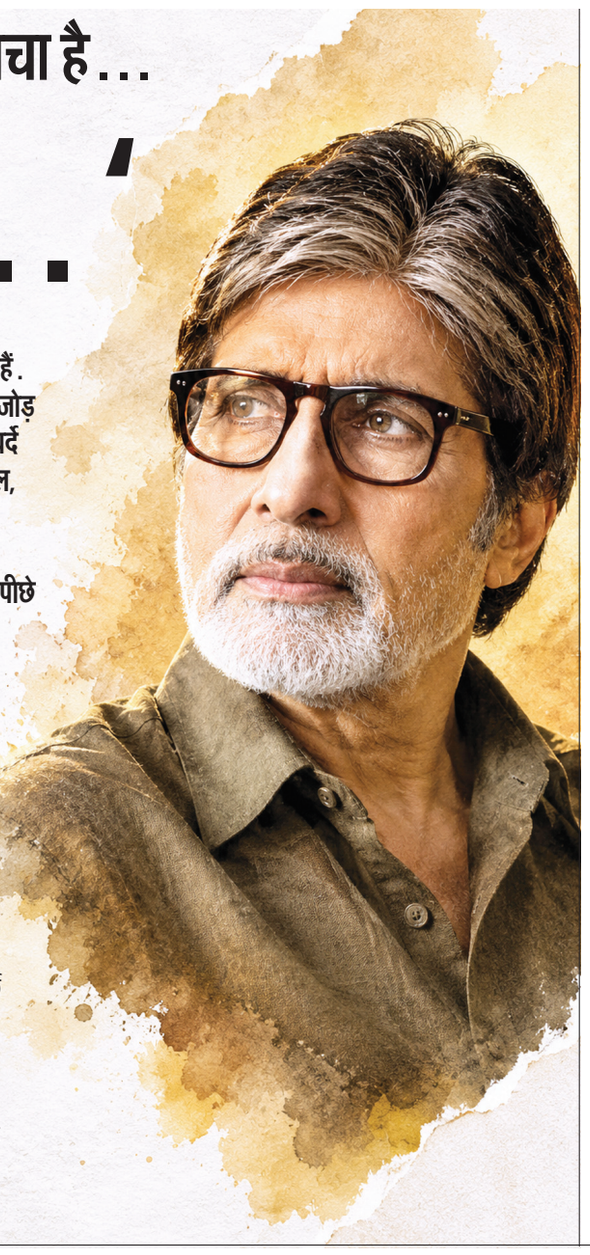
'इस दुनिया में सिर्फ एक ही भगवान बचा है...

और वो मैं हूं...'

अमिताभ बच्चन सिर्फ एक अभिनेता नहीं, बल्कि सिनेमा की दुनिया के जीवंत देवता हैं. 'इस दुनिया में सिर्फ एक ही भगवान बचा है... और वो मैं हूँ!' यह डायलॉग उनके बेजोड़ करिश्मे और दशकों के बेताज बादशाहत को पूरी तरह चरितार्थ करता है. भारतीय पर्दे पर उनका हर अंदाज आज भी पूजा जाता है. जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं! कल, 11 अक्टूबर को अमिताभ बच्चन 84 वर्ष के हो जाएंगे. इस उम्र में अधिकतर लोग विश्राम चुनते हैं, पर वह आज भी काम की घड़ी से बंधे हैं. सितारे बहुत हुए, पर पांच दशक से ज्यादा समय तक शिखर पर टिके रहना सिर्फ प्रतिभा से नहीं होता. उसके पीछे अनुशासन की वह अदृश्य रीढ़ होती है, जो चमक के पीछे दिखाई नहीं देती.



नकार से शुरू हुआ सफर

छह फुट दो इंच के दुबले-पतले युवक को शुरुआती दौर में 'बहुत लंबा' कहकर ठुकराया गया. ऑल इंडिया रेडियो ने भी उनकी आवाज अस्वीकार कर दी. यही आवाज आगे चलकर उनकी सबसे बड़ी पहचान बनी. फिल्मों में आने से पहले वे कोलकाता में नौकरी करते थे. 1969 में 'सात हिंदुस्तानी' से अभिनय की शुरुआत हुई. सबक साफ है: नकार रास्ता नहीं रोकता, तैयारी मांगता है.

गिरकर उठने की आदत

1982 में 'कुली' की शूटिंग के दौरान हुई चोट ने उनके जीवन को संकट में डाल दिया. लंबे इलाज के बाद लौटे, तो प्रशंसकों ने 2 अगस्त को उनका 'पुनर्जन्म दिवस' माना. 1990 के दशक में उनकी कंपनी एबीसीएल के घाटे ने भारी कर्ज का बोझ डाल दिया. तब उन्होंने कोई बहाना नहीं बनाया और काम मांगा. 2000 में 'कौन बनेगा करोड़पति' ने उनके करियर को नया जीवन दिया. सितारा वही है, जो हर पतन के बाद दिनचर्या में लौट आए.

सितारा बनाम सिलसिला

चमक क्षणिक होती है, पर नियम स्थायी. अमिताभ बच्चन की कहानी बताती है कि लोकप्रियता पाना एक उपलब्धि है और उसे निभाना रोज की साधना. दर्शक आज भी उन्हें सिर्फ इसलिए नहीं चाहते कि वे 'सदी के महानायक' हैं. वे इसलिए चाहते हैं कि वे हर दिन समय पर हाजिर रहते हैं .अनुशासन ही वह चीज है, जो सितारे को स्टार बनाए रखती है.

आज भी उतने ही सक्रिय

आज की सक्रियता इसका सबसे ताजा प्रमाण है. 'केबीसी' का 18वां सीजन 10 अगस्त 2026 को शुरू हुआ और वे फिर मेजबान हैं. इस बार की थीम 'सोचना पड़ेगा' है. शो के लिए उन्होंने सुबह सात बजे से अगली सुबह सात बजे तक लगातार 24 घंटे की शिफ्ट पूरी की और अपने ब्लॉग में लिखा कि काम समय पर पहुंचाना जरूरी था. खबरों के अनुसार वे नाग अश्विन की 'कल्कि 2898 एडी' के सीक्वल में अश्वत्थामा की भूमिका भी निभा रहे हैं. साथ ही ब्लॉग लिखने का उनका वर्षों पुराना नियम भी जारी है. वे अपने प्रशंसकों से रोज संवाद करते हैं.

काम का सिलसिला जारी

- **'कौन बनेगा करोड़पति' (सीजन 18):** यह कार्यक्रम सोमवार से शुक्रवार रात 9 बजे सोनी टीवी और सोनी लिव पर आता है. इसकी थीम 'सोचना पड़ेगा' है.
- **'कल्कि 2':** 'कल्कि 2898 एडी' के इस सीक्वल में वे फिर अश्वत्थामा बने हैं, जिसमें प्रभास और दीपिका पादुकोण भी हैं. खबरों के अनुसार उन्होंने इसकी शूटिंग पूरी होने की जानकारी सोशल मीडिया पर साझा की थी.
- **'सेक्शन 84':** रिभु दासगुप्ता निर्देशित यह कोर्टरूम ड्रामा है, जिसमें नम्रता कौर, अभिषेक बनर्जी और डायना पेंटी भी हैं. इसके 19 नवंबर 2026 को



आने की संभावना जताई गई है.

- **'ब्रह्मास्त्र पार्ट 2 : देव':** इसमें वे गुरु की भूमिका में रणबीर कपूर और आलिया भट्ट के साथ लौटेंगे.
- **'रामायण':** मीडिया रिपोर्टों के अनुसार वे इसमें जटायु को आवाज दे सकते हैं या भूमिका निभा सकते हैं. इसकी आधिकारिक पुष्टि अभी तक नहीं हुई है.

अनुशासन के पांच मंत्र

- **समय का सम्मान:** काम की समय-सीमा उनके लिए अंतिम है.
- **निरंतरता:** रोज का ब्लॉग वर्षों से जारी है.
- **तैयारी:** सेट पर पहुंचने से पहले संवाद और संदर्भ पक्के.
- **विनम्रता:** शिखर पर पहुंचकर भी दर्शकों को 'परिवार' कहना.
- **वापसी का साहस:** हार को ठहराव नहीं, मध्यांतर मानना.

क्लास by बड़े भाई

थोड़ा और ध्यान से देखिए



संदीप द्विवेदी

छोटे भाई, यह शीर्षक एक जादुई वाक्य है यह हमारे लिए कई रास्ते खोल सकता है.. हां, हो सकता है कि अभी यह बस मेरे लिए जादुई हो लेकिन इसके पीछे की कहानी सुनकर यह आपके लिए भी जादुई वाक्य हो सकता है..

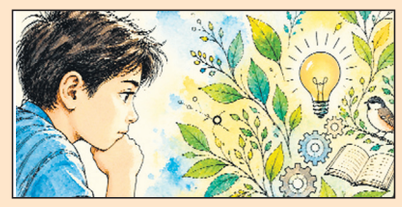
छोटे भाई, मैं शायद छठवीं कक्षा में था.. मेरे स्कूल में एक दिन एक अतिथि शिक्षक आए थे.. वो विज्ञान के कुछ प्रयोगों के बारे में बता रहे थे. यदि आज सोचूं तो प्रयोग बड़े सरल थे लेकिन उस समय मेरी समझ के हिसाब से बहुत उलझाऊ लेकिन रोचक थे. वो हमें लेंस पर सूरज की रौशनी को केन्द्रित करके कागज़ में आग लगाने जैसे प्रयोग दिखाकर अचंभित कर रहे थे.. इसमें बताने वाली बात यह थी कि वो प्रयोग कराते समय एक बात बार बार बोलते थे.. वो वाक्य यही शीर्षक था ' थोड़ा और ध्यान से देखिए, कुछ दिखेगा आपको' उनके इतना कहते ही सच में कुछ बदलते दिखने लग जाता और बड़ा अच्छा लगता था. आंखें वहीँ थी बस उनके इतना कहने पर हम सब पूरी बिना पलकें झपकाए देखने लगते थे..

साथियों, उस समय तो यह बात थी.. बाद में समय के साथ मेरे भीतर इसके बड़े मायने निकले.. हम सबको इस नजरिये का प्रयोग अपने कठिन समय में करना चाहिए.

छोटे भाई, हम किसी भी चुनौती में हों और निकलने का कोई विकल्प न दिख रहा हो.. उस समय यदि हम ध्यान से, धैर्य रखकर देखें तो उससे निपटने का कोई न कोई रास्ता ज़रुर दिख जाएगा और चुनौती से सामना करने का तरिउका दिखने लगेगा.. कोई भी समस्या हो. थोडा ठहरकर समाधान सोचेंगे तो कोई न कोई सम्भावना दिख ही जाएगी.

छोटे भाई, अब कोई भी चुनौती आए. यह वाक्य 'थोडा और ध्यान से देखिये' याद रखिएगा और उपयोग करिएगा.. निश्चित ही आप कोई न कि रास्ता खोज लेंगे क्योंकि हर मुश्किल से निकलने का कोई न कोई एक रास्ता होता ही है बस थोड़ा और ध्यान से देखने की जरुरत होती है.

(लेखक कवि और मोटिवेशनल स्पीकर हैं)



व्यंग्य

तमाशा घुस कर देखने का मजा



रवि उपाध्याय

दुनिया में ऐसा कोई बिरला ही व्यक्ति होगा जिसने जीवन में कभी तमाशा न देखा हो या खुद तमाशा न किया हो. लेकिन राज की बात यह है कि तमाशा देखने का मजा तभी है, जब उसे घुस कर देखा जाए. तमाशा देखने वाले को तमाशबीन कहा जाता है. लेकिन कुछ तमाशबीन ऐसे भी होते हैं जो खुद ही पूरी महफिल लूट ले जाते हैं और तमाशा दिखाने वाला टुकुर-टुकुर देखता रह जाता है. महाराष्ट्र में तमाशा एवं नाचा मनोरंजन की लोकप्रिय विधाएं हैं.

विभिन्न क्षेत्रों में तमाशा का अलग-अलग स्वरूप होता है. छोटे नगरों और कस्बों में मदारी बंदरों के जरिए तमाशा दिखाते थे. कभी जमूरे से जादू दिखाया जाता था, तो कभी बंदर से रूठकर बंदरिया को मायके जाते हुए दिखाया जाता था. मदारी आवाज देता था, 'जमूरे!' और जवाब आता था, 'जी उस्ताद!' 'इधर आओ!' 'उस्ताद, आ गया!' की आवाज भी जेहन में जिंदा है. लेकिन अब न मदारी रहे, न बंदर-बंदरिया. वन कानूनों के तहत जंगली जानवरों से प्रदर्शन कराने पर रोक लगा दी गई.



सवाल उठता है कि आखिर मदारी कहां गए? यह तो नहीं कहा जा सकता, लेकिन मदारियों जैसी वाकपटुता और बोलने की शैली अब विभिन्न पार्टियों के नेताओं में देखी जा सकती है. वही जमूरे दिखाई देते हैं, जो मदारियों के तमाशों में हुआ करते थे.

अब छोटे शहरों और कस्बों में भी मदारियों वाले तमाशे नहीं होते. वहां सियासी नेताओं के तमाशे होते हैं. महानगरों में ये जुलूसों और जलसों के रूप में होते हैं. पहले ऐसे तमाशों में युवतियां और महिलाएं कम दिखाई देती थीं, लेकिन अब वे फ्रंट फुट पर होती हैं. वे उन शब्दों का खुलेआम इस्तेमाल करती हैं, जिन्हें छोटे शहरों से आने वाले हम जैसे अनपढ़ लोग अश्लील गालियां कहते हैं. यह पढ़े-लिखे लोगों के लिए 'न्यू नॉर्मल' है. इन सियासी तमाशों में हमारी शिक्षा प्रणाली का खुलापन और गालियां देने की स्वतंत्रता भी दिखाई देती है. यह देखकर मन प्रसन्न हो जाता है कि शिक्षण संस्थान विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षा देकर सभ्य बना रहे हैं. महापुरुषों के नाम पर स्थापित संस्थानों की जिम्मेदारी देखकर मन श्रद्धा से भर जाता है.

बड़े शहरों के इन सियासी तमाशों में सब कुछ जंतर-मंतर है. नौटंकियों और नाटक मंडलियों की तरह इनमें नाच-गाने, नायक-खलनायक सब मौजूद हैं. आज भी मेले-ठेलों में ऐसी मंडलियां देखने को मिल जाती हैं. अब बड़े शहरों में यही लाइव मनोरंजन का साधन है. तमाशबीनों के साथ बड़े-बड़े नेताओं की मौजूदगी भी आकर्षण का केंद्र होती है. इन तमाशों में आने का मुख्य आकर्षण वहां मिलने वाला लजीज देसी-विदेशी लंच और डिनर होता है. मुफ्त मिलने वाली सुविधाओं को देखकर दिल भर आता है कि दुनिया भर में कितने परोपकारी धर्मात्मा हैं, जो विदेशों में बैठे होने के बावजूद तमाशाइयों और तमाशबीनों का ख्याल रखते हैं.

इन तमाशों को देखते हुए कवि-शायर दुष्यंत कुमार की गजल की कुछ पंक्तियां याद आती हैं:

'कैसे-कैसे
मंजर आने लगे हैं,
लोग गाते-गाते चिल्लाने लगे हैं. वो सलीबों के करीब आए तो
हमको, कायदे-कानून समझाने लगे हैं, मौलवी से डांट खा
कर अहले-मकतब, फिर उसी आयत को दोहराने लगे हैं.
कैसे-कैसे मंजर नजर आने लगे हैं लोग गाते-गाते चिल्लाने
लगे हैं.'

(लेखक व्यंगकार और राजनीतिक समीक्षक हैं)

खुद को जानने की राह



संदीप खमेसरा

एक हाई राइज बिल्डिंग में दो दोस्त रहते हैं. एक ग्राउंड फ्लोर पर. दूसरा पचासवीं मंजिल पर. उस शहर में तूफान बारिश खूब आते हैं. कई बार बैक वाटर का बहाव आता है, तो प्रभावित इलाकों में घरों की आधी मंजिल डूब जाती है. ऐसे ही किसी एक दिन, उस हाई राइज बिल्डिंग के ग्राउंड फ्लोर के घरों में पानी भरने लगा. पचासवीं मंजिल वाले दोस्त को फोन किया, तो वह सुहाने मौसम का आनंद लेने, उसे अपनी फ्लोर पर बुलाने लगा. कहने लगा, यहां से मौसम शानदार दिखाई पड़ रहा है. वह बेचारा, अब अपने कीमती साजो सामान को कहीं सुरक्षित स्थान पर ले जाने के जुगाड़ में लगे, या मौसम का लुत्फ उठाने पचासवीं मंजिल पर अपने दोस्त के यहां जाए?



कमोबेश यही स्थिति अध्यात्म के क्षेत्र में कुछ ज्ञान हासिल कर लिए या एक ऊंचाई पर पहुंचे मनीषियों की हो जाती है. दुख और पीड़ा में डूबे हुए साधकों को वे सीधे, आत्मा परमात्मा की गूढ़ बातें समझाने लगते हैं, जिसका उनकी उस वक्त की भावनात्मक और मानसिक स्थिति से कोई विशेष तालमेल बैठता नहीं! और, यही कारण है कि जिस गहराई से अध्यात्म, व्यक्ति के जीवन में उतरना चाहिए, उतना उतर नहीं पाता. न तो उस विषय पर जीवन पर्यंत स्पष्टता बनती है और न ही यह विषय समझ ही आता है. बस, मान्यताओं के बंधन में ही यह बंधा रह जाता है. मनुष्य जीवन में जिस प्रयोगात्मक तरीके से इसका हर आयाम पर उपयोग हो सकता है, वह बहुत पीछे रह जाता है.

चिंतन

आत्मा परमात्मा को जानने और समझने से पहले स्वयं की अवस्था, संवेदना, क्रिया और प्रतिक्रियाओं के प्रति सचेत होना पड़ेगा. उन स्रोतों को पकड़ना पड़ेगा, जहां से इन संवेदनाओं की तरंगें उठती हैं. पहले केवल स्वयं के संवेगों से रूबरू होना पड़ेगा. स्वयं को पहचानने के लिए पहले, एक लंबे अरसे की निरंतर दृष्टि स्वयं की ओर उन्मुख करनी होगी. स्वयं के शरीर की ही नहीं, स्पंदनों और उत्तेजनाओं को भी महसूस करना होगा. देखने की (प्रेक्षा की) इस तरह की एक लंबी साधना के उपरांत विचार, मन और भावों की तरंगें, कुछ पकड़ में आने लगेंगी. इन्हें पकड़े बिना, इनकी गति या इनकी दिशा को बदला नहीं जा सकता!कई ज्ञान परंपराएं, एक बैठक में निर्विचारिता या कुंडलिनी की अनुभूति करा देने का दावा करती हैं. हो भी सकता है. लेकिन, उससे साधक का जीवन बदला या नहीं, यह जानना और समझना महत्वपूर्ण है. विषय के सिद्धांतों को रट कर रूपांतरण सिद्ध नहीं किया जा सकता. उन सिद्धांतों को स्वयं के जीवन पर प्रायोगिक रूप से लागू करने से ही बात बन सकती है. अध्यात्म में शॉर्ट कट होता ही नहीं! यह निरंतर प्रयासों और स्वयं पर प्रयोगों से ही परिपक्वता पा सकता है. एक बार विषय की समझ हो जाने के उपरांत जैसे-जैसे भीतर से प्रगाढ़ता बढ़ती है, ज्ञान अनावृत होने लगता है. ज्ञान भीतर से ही प्रकट होता है. बाहर से केवल सूचनाओं और जानकारियों का पिटारा मिलता है!!

पिपासु साधकों को ज्ञान हासिल करने के लिए बहुत अधिक भटकने की आवश्यकता नहीं होती. केवल स्वयं की वृत्तियों के प्रति जागरूकता ही शनैः-शनैः आत्म साक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त कर देती है.

कविता

जिंदगी



पुनीत श्रीवास्तव

जंग खाया सरौता
फफूंद लगी खैनी
विक्स की डिबिया
बिन चाबी का पुराना ताला.
माचिस का खाली खोखा
किसी जमीन का नक्शा
शहर गए लड़के को भेजे
मनीआर्डर की चंद रसीदें.
लल्लन की शादी का
निमंत्रण पत्र
कोना कटा एक शोक पत्र
फटी छोटी गेंद कुछ कंचे
मुड़े तुड़े ताश के पत्ते
यूं ही सहेजे गए कुछ गत्ते.
कुछ पुराने सिक्के
जो अब नहीं चलते.
आसान नहीं है
जमा सामान से
खूंटी पर टंगे
फटे-पुराने थैले में पड़ा है
कुछ सामान कुछ सपने
थोड़े गैरों के कुछ अपने.
बदरंग हुए तकादे के पर्चे
हिसाब किताब की कॉपी
लिखे हैं जिसमें बचत और खर्चे.
कुछ रुक्के



टूटे पिचके हुक्के.
तड़का हुआ पेन
डंडी टूटा चश्मा
अधजली बीड़ियों का बंडल
एक छोटा सा कमंडल.
तुलसी की टूटी माला
कुछ लिखे-अधलिखे
पोस्ट कार्ड
जिंदगी नापना
एक उम्र कम है
टूटे भूले बिसरे सिरों को
बांधने सहेजने समेटने में.
तब तक उस थैले में
कुछ और सामान
कुछ और सपने जमा हो
जाते हैं.

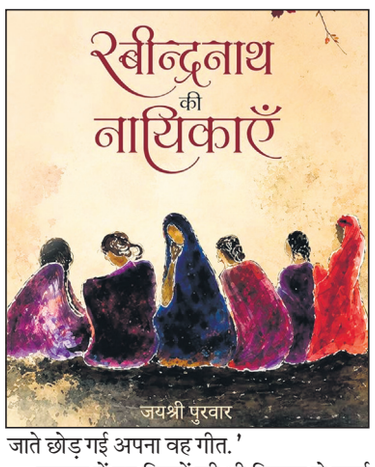
पुस्तक चर्चा

जीवन और सृजन को प्रेरणा देतीं रवीन्द्रनाथ की नायिकाएं



मनीष वैद्य

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के निजी जीवन के बारे में बहुत लिखा गया है, लेकिन उनके जीवन में आई स्त्रियों के बारे में हिंदी में यह पहली पुस्तक है. एक महाकवि, सजग चिंतक, अप्रतिम गद्यकार, प्रख्यात शिक्षाविद, अनोखे संगीतकार, नवाचारी रंगकर्मी और आधुनिक चित्रकला के मूर्धन्य कलाकार के जीवन में आई स्त्रियों की यह कथा रोचक है. 'रवीन्द्रनाथ की नायिकाएं' उन महिलाओं की कहानी है, जिनके साथ रवि बाबू के घनिष्ठ संबंध रहे. इन स्त्रियों ने न केवल उनके जीवन को प्रभावित किया, बल्कि उनकी लेखनी को भी प्रेरित किया. उनकी स्मृति और सृजन में ये जीवन के अंत तक बनी रहीं.



निजी संबंधों से उपजा सृजन

रवीन्द्रनाथ की मां सारदासुंदरी देवी का निधन उनके बाल्यकाल में हो गया था. वे उनकी चौदहवीं संतान और सबसे छोटे पुत्र थे. मां के बाद उनकी देखभाल बड़ी बहन सौदामिनी ने की. वे एक जगह लिखते हैं, 'मेरे झूले को ठेलते हुए मां शायद गाती थीं गीत. मां चली गईं, जाते-जाते छोड़ गई अपना वह गीत.'

पुस्तक में उन स्त्रियों की भी विस्तार से चर्चा है, जिनसे रवि बाबू के रागात्मक संबंध रहे. उनकी हमउम्र भाभी कादंबरी के साथ उनके संबंधों को लेकर बंगाली समाज में कई तरह की चर्चाएं रही हैं. कादंबरी की असमय मृत्यु ने रवीन्द्र के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ा, जो उनके साहित्य में भी झलकता है. कवि को अंग्रेजी पढ़ाने वाली उनसे तीन साल बड़ी अन्नपूर्णा (आन्ना) भी उनसे प्रभावित थीं. इंग्लैंड में लूसी स्कॉट से उनकी निकटता बढ़ी. हालांकि, रवि बाबू ने परिवार की इच्छा से मृणालिनी से विवाह किया. मृणालिनी में उन्हें पत्नी, प्रेमिका और मां का रूप देखने को मिला.

प्रेरणा, संगीत और बौद्धिक मित्रता

मझली भाभी ज्ञानदानंदिनी से उन्हें प्रेरणा मिली, जबकि उनके गीतों को सुरों से समृद्ध करने में भांजी सरला की अहम भूमिका रही. पुत्रवधू प्रतिमा देवी, मैत्रेयी, लेडी रानू, रानी चंद, अमिता सेन और श्रावणी ने शांतिनिकेतन में संगीत और नृत्य की परंपरा को आगे बढ़ाया. बहन स्वर्णा ने साहित्यिक संगिनी के रूप में उनका साथ दिया. उनसे 11 साल छोटी भतीजी इंदिरा देवी अनुवादक, लेखिका, संगीतकार और समाज सुधारक थीं. विक्टोरिया ओकैंपो, तोमिको कोअरा और हेमंत बाला से उनकी बौद्धिक मित्रता भी उल्लेखनीय रही.हमारे यहां स्त्री-पुरुष संबंधों को अक्सर एक खास नजरिए से देखा जाता है, चाहे उनकी उम्र कुछ भी हो. लेकिन विश्वकवि और उनकी प्रेरणास्रोत नायिकाओं के बीच संबंध एक अलग स्तर तक पहुंचे. पुस्तक इस विषय पर पर्याप्त रोशनी डालती है. इन स्त्रियों ने रवीन्द्रनाथ की सृजन दृष्टि को विस्तार दिया और उन्हें निरंतर रचने की प्रेरणा दी. जयश्री पुरवार ने यह पुस्तक लिखी है, इसलिए इसकी प्रामाणिकता और बढ़ जाती है.

रवीन्द्रनाथ की नायिकाएं
लेखिका : जयश्री पुरवार
प्रथम संस्करण : अगस्त 2026
कीमत : 299 रुपये
हिंद युग्म, नोएडा (उत्तर प्रदेश)

लघु कथा

उल्टा पासा



मीरा जैन

सरकारी स्कूलों में शिक्षक के रिक्त पदों के लिए विज्ञप्ति जारी की गई . अंतिम तिथि करीब आ गई किंतु इन पदों के लिए गिने चुने लोगों से ही आवेदन प्राप्त हुए यह देख शिक्षा विभाग असमंजस में पड़ गया कि ऐसा क्यों हुआ? पूर्व में तो जब कभी विज्ञप्ति निकलती थी तो 50 पद हैं और अगले दिन ही आवेदन 5000 से अधिक आ जाते थे पर इस बार ऐसा क्यों हुआ? इसका कारण जानने की चाह में पूरा विभाग जुट गया अंत में उन्हें मात्र एक कारण नजर आया जो इस विज्ञप्ति में जोड़ा गया था वह नवीन कालम था- यदि आप शिक्षक पद पर चयनित होते हैं तो अनिवार्य रूप से आपको अपने बच्चों का दाखिला सरकारी स्कूल में करवाना होगा.



संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी